B.A. I Psychology (H)
Paper I, General Psychology

Topic- Theory of emotion (Canon-Bard)

कैनन तथा बार्ड (Cannon and Bard) ने जेम्स-लैंजे सिद्धान्त को गलत बताया तथा अपने अध्ययनों के आधार पर एक अलग सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनके सिद्धान्त को हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त (Hypothalamic theory) के नाम से पुकारा जाता है। कैनन तथा बार्ड का कहना है कि संवेगात्मक व्यवहार को संवेगात्मक अनुभूति का कारण मानना गलत है साथ ही, जैसा कि जेम्स और लैंजे ने माना है, संवेग में केवल स्वतः संचालित स्नायुमंडल से सहानुभूतिक मंडल और बृहत मस्तिष्क का ही प्रमुख स्थान नहीं है बल्कि हाइपोथैलेमस का सर्वाधिक महत्व है। उनके अनुसार हाइपोथैलेमस ही संवेग का नियंत्रण करता है। इसे हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त की संज्ञा दी जाती है। कैनन तथा बार्ड के अनुसार, संवेग की क्रिया में सबसे पहले संवेगात्मक परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण होता है जिसके फलस्वरूप हाइपोथैलेमस उत्तेजित होता है। इसके बाद हाइपोथैलेमस से स्नायुप्रवाह निकलकर एक ही समय में बृहत मस्तिष्कीय वल्क तथा आंतरावयव एवं मांसपेशियों में जाता है। फलस्वरूप एक ही समय प्राणी में

संवेगात्मक अनुभूति और संवेगात्मक व्यवहार दोनों होते हैं।

हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त के वर्णन से स्पष्ट है कि इस सिद्धान्त के अनुसार हाइपोथैलमस से निकलकर स्नायु-प्रवाह एक ही समय वृहत मस्तिष्क तथा अंतरावयव की धारीदार मांसपेशियों में जाते हैं जिसके फलस्वरूप संवेगात्मक अनुभव और संवेगात्मक व्यवहार दोनों एक ही साथ होते हैं। इस प्रकार जेम्स-लांगे सिद्धान्त के विरुद्ध आरोपित आलोचनाएं इस सिद्धान्त पर लागू नहीं होती। उदाहरण के लिए, कैनन तथा शेरिंगटन द्वारा कुत्ते एवं बिल्लियों पर किए गए प्रयोग में देखा गया कि जब अंतरावयव और वृहत मस्तिष्कीय वल्क के बीच संबंध स्थापित करने वाली प्रधान प्रतिक स्नायु को काट दिया गया तब भी कुत्ते और बिल्ली में संवेगात्मक अनुभव उत्पन्न हुआ। इस तथ्य की व्याख्या करने में जेम्स लांगे का सिद्धान्त सफल नहीं हुआ। परन्तु हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त द्वारा इसकी व्याख्या हो जाती है। इस सिद्धान्त के अनुसार हाइपोथैलमस से उत्पन्न स्नायु-प्रवाह एक ही साथ अंतरावयव, धारीदार मांसपेशियों एवं वृहत मस्तिष्कीय वल्क में जाता है। संवेगात्मक परिस्थिति के प्रत्यक्षीकरण के साथ ही जाते हैं। हाइपोथैलेमिक ~~सिद्धान्त~~ सिद्धान्त के अनुसार अंतरावयव और वृहत-मस्तिष्क का संबंध विच्छेद हो जाने पर भी

हाइपोथैलेमस और मस्तिष्क का संबंध बना रहता है।

हाइपोथैलेमस सिद्धान्त संवेग उत्पत्ति में अंतरावयव के महत्व को गौण मानता है। यह सिद्धान्त बताता है कि चूंकि संवेग की उत्पत्ति में हाइपोथैलेमस का ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है और हाइपोथैलेमस के स्नायु-प्रवाह को मस्तिष्क में पहुँचने में भी कुछ भी समय नहीं लगता, इसलिए संवेगात्मक अनुभव अविलम्ब हो जाता है।

यह सही है कि कैनन-बार्ड का हाइपोथैलेमस सिद्धान्त जेम्स-लांजे सिद्धान्त की अनेक आलोचनाओं को दूर करने में सफल है। फिर भी यह सिद्धान्त बिलकुल दोषरहित है। इस सिद्धान्त में भी कुछ त्रुटियाँ हैं जो निम्नलिखित है।

(1) यह सिद्धान्त संवेग की उत्पत्ति में हाइपोथैलेमस का ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान मानता है जो सही नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि हाइपोथैलेमस के अतिरिक्त स्नायुमंडल के अन्य भागों का भी संवेग में महत्वपूर्ण स्थान है। इस बात की पुष्टि इससे हो जाती है कि हाइपोथैलेमस को उत्तेजित करने के ~~पश्चात~~ फलस्वरूप पशुओं में जो संवेगात्मक व्यवहार उत्पन्न होते हैं वे स्वाभाविक रूप से उत्पन्न संवेगात्मक व्यवहार से भिन्न होते हैं।

कृत्रिम रूप से हाइपोथैलेमस को उत्तेजित करने के फलस्वरूप उत्पन्न संवेगात्मक

स्वाभाविक रूप से उपर्युक्त संवेगात्मक व्यवहार की अपेक्षा (1) क्षणिक होते हैं (2) अधिक दृढ़ (3) अभियोजन की क्षमता में कमी (4) अधिक नियंत्रित (5) किसी परिस्थिति विशेष की ओर कम उन्मुख होते हैं।

(2) कैनन-बार्ड ने अपने सिद्धान्त में संवेग की उत्पत्ति का मुख्य स्थल हाइपोथैलेमस को माना है, संवेगों से उत्पन्न तनाव को दूर करने में हाइपोथैलेमस समर्थ नहीं है।

अतः उपर्युक्त त्रुटियों के कारण कैनन-बार्ड सिद्धान्त को भी संवेग का एक सर्वोत्तम सिद्धान्त नहीं माना जा सकता है।

Kumar Patel
Maharaja College, Ara